ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in June 2025

एक विस्तृत प्रारूप हिंदी भाषा में प्रस्तुत है: किसान आंदोलन और इसका रूपः राजस्थान के संदर्भ में

गुरमीत सिंह संधू, शोधार्थी (इतिहास) टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ. मुकेश हर्ष, सहायक आचार्य (इतिहास) टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

अमूर्त

यह शोध पत्र ब्रिटिश काल के राजस्थान (तत्कालीन राजपूताना) में हुए किसान आंदोलनों के स्वरूप, कारणों और परिणामों का विस्तृत विश्लेषण करता है। राजस्थान में किसान आंदोलन, सामंती शोषण, अत्यधिक लाग–बाग (अवैध कर), बेगार प्रथा और कठोर भू–राजस्व व्यवस्था की प्रतिक्रिया थे। इस शोध में विशेष रूप से बिजोलिया किसान आंदोलन (1897–1941), बेगूँ किसान आंदोलन, और शेखावाटी किसान आंदोलन जैसे प्रमुख आंदोलनों के अध्ययन पर बल दिया गया है। शोध यह जाँच करता है कि कैसे इन आंदोलनों का नेतृत्व स्थानीय साधुओं और किसानों से उठकर विजय सिंह पथिक जैसे राष्ट्रीय नेताओं के हाथ में आया, जिसने आंदोलन के स्वरूप को स्थानीय प्रतिरोध से संगठित राष्ट्रीय धारा में बदल दिया। निष्कर्ष बताते हैं कि यद्यपि इन आंदोलनों का तात्कालिक उद्देश्य कृषि सुधार था, परंतु इसने सामंतशाही के विरुद्ध राजनीतिक चेतना का प्रसार किया और अंततः स्वतंत्रता संग्राम के लिए आधार तैयार किया।

परिचय

स्वतंत्रता–पूर्व भारत में, किसान आंदोलन भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे। राजस्थान, जो कि कई रियासतों और जागीरों में बंटा हुआ था, में किसानों की स्थिति विशेष रूप से दयनीय थी। यहाँ का किसान दोहरे शोषण का शिकार थारू एक ओर अंग्रेजी सरकार और दूसरी ओर स्थानीय राजाओं और जागीरदारों की निरंकुशता। जागीरदारों द्वारा लगाए गए 84 प्रकार के करों (लाग–बाग) और बेगार (बिना मजदूरी के काम) प्रथा ने किसानों के जीवन को नारकीय बना दिया था। राजस्थान में किसान आंदोलनों ने देश के अन्य हिस्सों से अलग एक विशिष्ट रूप लिया। वे न केवल आर्थिक शिकायतों पर आधारित थे, बल्कि सामंती व्यवस्था और सामंत–जागीरदार वर्ग की मनमानी के खिलाफ एक सामाजिक–राजनीतिक प्रतिरोध भी थे। इन आंदोलनों ने पहली बार संगठन, अहिंसा और राष्ट्रीय नेतृत्व के सिद्धांतों को अपनाया, जिससे वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की मुख्यधारा से जुड़ गए।

साहित्य समीक्षा

राजस्थान के किसान आंदोलनों पर पर्याप्त शोध किया गया है, जिसका मुख्य केंद्र बिजोलिया किसान आंदोलन रहा हैरू डॉ. शंकरसहाय सकसेना की शबिजोलिया किसान आन्दोलन का इतिहासश इस विषय पर प्रारंभिक और मूलभूत कार्य है, जो आंदोलन के चरणों, नेताओं और कारणों का विस्तृत वर्णन करता है। रामनारायण चौधरी और विजय सिंह पथिक के संस्मरण (Memoirs) आंदोलन की आंतरिक जानकारी प्रदान करते हैं। आधुनिक इतिहासकार जैसे प्रो. हरि सिंह और देवी लाल पालीवाल ने इन आंदोलनों को क्षेत्रीय इतिहास से जोड़कर, उनके सामाजिक–आर्थिक निहितार्थों और सामंतशाही पर उनके प्रभाव का विश्लेषण किया है। इन अध्ययनों ने स्थापित किया है कि आंदोलनों का उद्देश्य केवल करों में कमी नहीं, बल्कि किसानों की सामाजिक प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित करना भी था। एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि शेखावाटी जैसे आंदोलनों में महिला किसानों की सक्रिय भागीदारी पर भी ध्यान दिया गया है, जो इस बात का प्रमाण है कि प्रतिरोध व्यापक और समावेशी था। यह शोध पूर्व साहित्य से परे जाकर, विभिन्न आंदोलनों के रणनीतिक अंतरों और उनके अहिंसक तथा संगठित स्वरूप पर बल देता है, जो उन्हें समकालीन भारतीय किसान आंदोलनों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बनाता है।

उद्देश्य

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैंरू राजस्थान में किसान आंदोलनों (विशेषकर बिजोलिया, बेगूँ और शेखावाटी) के उद्भव के मूल आर्थिक और सामाजिक कारणों की पहचान करना। इन आंदोलनों के नेतृत्व की प्रकृति और उनके संचालन के तरीकों (विधितंत्र) का विश्लेषण करना, जिसमें अहिंसा और संगठन की भूमिका पर बल दिया जाएगा। राजस्थान के किसान आंदोलनों के तात्कालिक (कर में कमी) और दीर्घकालिक (राजनीतिक चेतना का उदय और सामंतशाही का पतन) परिणामों का मूल्यांकन करना। विभिन्न रियासतों में हुए किसान आंदोलनों के स्वरूपों की तुलना करना और उनके बीच के अंतरों को समझना।

परिकल्पना

इस शोध की प्रमुख परिकल्पनाएं (Hypotheses) निम्नलिखित हैं: शून्य परिकल्पना (\text{H}_0)रू राजस्थान के किसान आंदोलन मुख्य रूप से स्थानीय और आर्थिक शिकायतों तक सीमित थे और इनका राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से कोई महत्वपूर्ण जुड़ाव नहीं था।

वैकल्पिक परिकल्पना

(\text{H}_1): राजस्थान के किसान आंदोलन न केवल आर्थिक शोषण के विरुद्ध थे, बल्कि संगठित, दीर्घकालिक और अहिंसक प्रतिरोध के माध्यम से इन्होंने राजनीतिक चेतना का प्रसार किया, जिसने सामंती शासन की वैधता को चुनौती दी और उन्हें राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन की मुख्यधारा से जोड़ा।

द्वितीय वैकल्पिक परिकल्पना

(\text{H}_2): बिजोलिया आंदोलन की सफलता (या लंबी अवधि) का मुख्य कारण विजय सिंह पथिक जैसे बाहरी (गैर–स्थानीय) और राष्ट्रीय स्तर पर जुड़े नेताओं का कुशल नेतृत्व तथा अहिंसा पर आधारित आंदोलन का विधितंत्र था।

महत्व

यह शोध पत्र राजस्थान के किसान आंदोलनों की जटिलता और गहराई को उजागर करता है। यह न केवल इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि वर्तमान किसान राजनीति और आंदोलनों को समझने के लिए भी एक आधार प्रदान करता है। यह अध्ययन स्थापित करेगा कि कैसे ग्रामीण प्रतिरोध ने रियासती शासन की नींव को हिलाया और प्रजा मंडल आंदोलनों के उदय में अप्रत्यक्ष रूप से सहायता की। यह शोध उन गुमनाम किसानों और स्थानीय नेताओं के संघर्षों को भी श्रद्धांजलि देता है जिन्होंने भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए संघर्ष किया। विधितंत्र (Vidhi Tantra & Methodology) यह शोध मुख्य रूप से ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक विधितंत्र (Historical and Analytical Methodology) का उपयोग करता है। डाटा स्रोतः शोध प्राथमिक रूप से द्वितीयक डेटा (Secondary Data) पर निर्भर करता है, जिसमें रियासती अभिलेख, किसान आंदोलन के नेताओं द्वारा लिखित पुस्तकें और संस्मरण, समकालीन समाचार पत्र (जैसे श्प्रतापश्), और राजस्थान राज्य अभिलेखागार के ऐतिहासिक दस्तावेज शामिल हैं। विश्लेषण की विधि: घटना कालिक विश्लेषण (Chronological Analysis): बिजोलिया आंदोलन के तीन चरणों (साधु सीताराम दास, विजय सिंह पथिक और माणिक्य लाल वर्मा) के नेतृत्व परिवर्तन और रणनीति में आए बदलावों का अध्ययन करना। तुलनात्मक विश्लेषण: बिजोलिया के अहिंसक और दीर्घकालिक आंदोलन की तुलना बेगूँ के हिंसक दमन (गोविन्दपुरा कांड) या अलवरध्शेखावाटी के आंदोलनों से करना। विषय वस्तु विश्लेषण (Content Analysis): तत्कालीन समाचार पत्रों और सरकारी रिपोर्टों में किसान आंदोलनों के चित्रण का अध्ययन करना ताकि आंदोलन के स्वरूप और जनमत पर इसके प्रभाव को समझा जा सके।

निष्कर्ष

राजस्थान में किसान आंदोलन भारतीय इतिहास के सबसे संगठित और दीर्घकालिक आंदोलनों में से थे। ये आंदोलन, विशेषकर बिजोलिया, सामंती शोषण के खिलाफ न केवल आर्थिक संघर्ष थे, बल्कि किसानों की जातिगत पहचान से ऊपर उठकर संगठित होने की क्षमता का भी प्रमाण थे। वैकल्पिक परिकल्पना (\text{H}_1) और (\text{H}_2) दोनों की पुष्टि होती है। संगठन और नेतृत्वरू विजय सिंह पथिक और रामनारायण चौधरी जैसे राष्ट्रीय नेताओं के प्रवेश ने आंदोलन को व्यापक राष्ट्रीय समर्थन और एक कुशल संगठनात्मक संरचना प्रदान की। अहिंसक स्वरूपरू बिजोलिया जैसे आंदोलनों ने अहिंसक सत्याग्रह के तरीकों को सफलतापूर्वक अपनाया, जिसने दमन के बावजूद आंदोलन को लंबे समय तक जारी रखने में मदद की और राष्ट्रीय नेताओं (जैसे महात्मा गांधी) का ध्यान आकर्षित किया। दीर्घकालिक प्रभावरू यद्यपि सभी मांगों को तुरंत पूरा नहीं किया गया, इन आंदोलनों ने जागीरदारी व्यवस्था की नींव को खोखला कर दिया। इन्होंने किसानों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा की और बाद में प्रजामंडल आंदोलनों के लिए जन–आधार तैयार किया, जो अंततः रियासतों के भारतीय संघ में विलय में सहायक सिद्ध हुए। इस प्रकार, राजस्थान के किसान आंदोलनों का स्वरूप स्थानीय आर्थिक संघर्ष से शुरू होकर राष्ट्रव्यापी राजनीतिक चेतना के एक महत्वपूर्ण चरण में विकसित हुआ।

ग्रंथ सूची

सकसेना, शंकरसहाय। (बिजोलिया किसान आन्दोलन का इतिहास)। राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, 1972.

पथिक, विजय सिंह। (मेरे संस्मरण)। (विभिन्न संस्करण)। चौधरी, रामनारायण। (वर्तमान राजस्थान)। (विभिन्न संस्करण)। सिंह, हरि। (Agrarian Relations and Peasant Movements in Rajasthan). Oxford University Press, 2007.

शर्मा, जी.एन.। (Social Life in Medieval Rajasthan). Sahitya Akademi, 1968. पालीवाल, देवी लाल।